लव और कुश



2·00

आर. बी. एस. प्रकाशन, हरिद्वार (उ०प्र०)

लव और कुश



इस पुस्तक में—

सीता बनवास	बालकों का जन्म
अश्वमेध यज्ञ	अश्व बन्धन
कालजित से युद्ध	पुष्कल की पराजय
हनुमान की हार	शत्रुघ्न से युद्ध
सीता का धरती प्रवेश	इत्यादि—

कथाएँ रोचक शैली में—



मूल्य : २.००

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार उ.प्र.

प्रिय पाठको,

आशा है आपको इस पुस्तक की कहानियां रुचिकर, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक लगी होंगी। हमने इस प्रकार की कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनका मूल्य बहुत ही कम रखा है ताकि अधिक से अधिक बालक व पाठक लाभ उठा सकें। कहानियां, जीवनियां और चुटकले की जो पुस्तकें छप चुकी हैं उनके नाम इसी पुस्तक के पीछे दिए हुए हैं। चुटकले की पुस्तकें प्रत्येक का मूल्य ४.०० है तथा शेष सभी जीवनियां और कहानियाँ प्रत्येक का मूल्य २.०० है।

हमारी बिना किसी अतिरिक्त व्यय के डाक द्वारा पाठकों तक पुस्तकें भेजने की योजना भी है। इसके अनुसार आपको ३०.०० का मनीआर्डर हमें भेजना है और इतने मूल्य की पुस्तकों के नाम भी भेज दें। रुपये मिलने पर हम पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट से भेजते हैं। डाक व्यय लगभग ८.०० हम स्वयं देते हैं। इस प्रकार से दूर-दूर के गांवों तक में पाठकों को उनके भेजे गए रुपयों का पूरा लाभ मिल जाता है और पुस्तकें भी सुरक्षित पहुंचती हैं।

आप भी चाहें तो ३०.०० मनीआर्डर से भेजकर घर बैठे पुस्तकें मंगायें। मनीआर्डर भेजने का पता–

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

नोट : कृपया मनीआर्डर कूपन पर अपना पता व पुस्तकों का नाम साफ-साफ लिखें।

लव और कुश

सीता बनवासः-

बनवास से लौटकर सिंहासन पर बैठने के बाद एक दिन श्रीराम ने अपने और सीता के बारे में एक अपवाद सुना। कहा जाता हैं कि यह अपवाद किसी धोबी के मुख से सुना गया था। उन्होंने धोबी को पत्नि से यह कहते सुना–'कुलटा ! निकल जा यहां से मैं राम जैसा नहीं हूँ कि पराए घर में रही हुई स्त्री को फिर अपने घर में रख लूं।..........'

कुछ ग्रन्थों में यह भी लिखा है कि श्रीराम ने अपने गुप्तचर से एक दिन यह पूछा कि जनता हमारे किसी कार्य से असंतुष्ट तो नहीं है ?

गुप्तचर ने निवेदन किया–'महाराज आपकी केवल एक ही बात लोगों को खटकती है। वह यह कि आपने रावण के यहां रही हुई जानकी को पुनः पत्नीवत् ग्रहण कर लिया हैं, तो लोग कहते हैं कि अब तो कोई भी अपनी स्वच्छन्द विहारिणी स्त्री को घर में रहने से नहीं रोक सकेगा।'

राम इस लोकापवाद से भयभीत हो गये। एक दिन उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण को एकान्त में बुलाकर उससे कहा–'मेरी अंतरात्मा कहती है कि सीता सर्वथा निर्दोष है लेकिन लोक को इस विषय में कुछ सन्देह है। उसके कारण समाज में मेरी निन्दा हो रही है। अतएव मैं सीता का त्याग करना चाहता हूँ। तुम इसका बुरा न मानना। तुम्हें मेरे चरणों की शपथ है कि कल ही तुम सीता को तपोवन दिखाने के बहाने गंगा पार तमसा के

वन में ले जाओ और महर्षि बाल्मीकि के आश्रम के पास छोड़ आओ।..............'

यह कहते-कहते राम की आंखें सजल हो गईं।

ऊपर से शान्त लेकिन भीतर से दुःखी लक्ष्मण दूसरे दिन सीता को तपोवन यात्रा के बहाने रथ में लेकर चल पड़े। सीता उस समय गर्भवती थी।

रथ गंगा किनारे पहुंचा। दोनों नाव से उस पार पहुंचे। तमसा के किनारे लक्ष्मण खड़े हो गये और रोने लगे। सीता को बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने इसका कारण पूछा। लक्ष्मण बोले-'भाभी! आज मेरा मर जाना ही श्रेष्ठ है। मैं अति कठोर कर्म करने जा रहा हूं। भाई राम ने लोकापवाद से डरकर आपका परित्याग कर दिया है। मैं उन्हीं की आज्ञा से आपको वन में छोड़ने आया हूं। पास ही महर्षि बाल्मीकि की कुटिया है। मुझे विश्वास है कि वे आपकी देखभाल करेंगे।'

सीता को यह सुनकर असह्य दुःख हुआ। वे कातर स्वर में लक्ष्मण से बोली–'तुम्हारा या महाराज का इसमें कोई दोष नहीं, मेरे ही जन्म जन्मातर के पाप उदय हुए हैं। तुम महाराज की आज्ञा का पालन करो। लौटकर महाराज से कहना कि मेरे कारण यदि लोक में उनकी निन्दा होती है तो मैं उसे दूर करने के लिए बड़े से बड़े कष्ट सह लूँगी।

लक्ष्मण सीता को वहीं छोड़कर रोते हुए लौट गये। वन में अकेली सीता भी रोने लगीं। कुछ मुनिकुमारों ने उन्हें देखा और जाकर महर्षि को सूचित किया। बाल्मीकि स्वयं सीता के पास आये और उन्हें सान्त्वना देकर आश्रम में ले गये। आश्रम के समीप ही मुनियों की पत्नियां भी रहती थीं, सीता उन्हीं के साथ तपस्विनी की भांति रहने लगी।

बालकों का जन्मः—

कुछ समय बाद अनाथिनी सीता ने एक साथ

दो (जुड़वां) कुमारों को जन्म दिया। महर्षि ने स्वयं दोनों बालकों के धार्मिक संस्कार किए। एक का नाम उन्होंने लव रखा दूसरे का कुश। दोनों को उन्होंने बड़े स्नेह से पाला-पोसा और पढ़ा-लिखा कर सब प्रकार से सुयोग्य बनाया। दोनों धीरे २ बड़े होते गये तो सीता का जीवन बहुत कुछ सरस हो गया। जब वे कुछ और बड़े हुए तो बाल्मीकि उन्हें अस्त्र शस्त्र चलाने की शिक्षा भी देने लगे। उन्हीं दिनों महर्षि बाल्मीकि रामायण की रचना कर रहे थे। उसे भी उन्होंने दोनों कुमारों को कण्ठस्थ करा दिया। सीता अपने पुत्रों के मुख से अपने प्रियतम का गुणगान सुनकर फूली नहीं समाती थी। लेकिन उन बालकों को यह पता नहीं था कि वे राम के ही पुत्र हैं। वे अपने आपको ऋषि सन्तान ही मानते थे।

उधर राम ने सीता को घर से तो त्याग दिया लेकिन मन से नहीं निकाल सके। उन्होंने दूसरा विवाह भी नहीं किया। परित्यक्ता सीता को जब

यह मालूम हुआ तो उन्होंने इसे अपना अहोभाग्य समझा।

अश्वमेध यज्ञ:—

कई वर्ष बाद राम ने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया। इस प्रसंग में कहा जाता है कि पुराने समय में अश्बमेध यज्ञ जनता की भलाई के लिए राजाओं द्वारा किया जाता था। इस यज्ञ को राजसूय यज्ञ के नाम से भी पुकारा गया है।

अश्वमेध आरम्भ करने से पहले घी-मिला चावल पकाया जाता था और उसे यज्ञ करने वाले चार प्रमुख पुरोहितों को दिया जाता था। चावल के साथ ही पुरोहितों को दक्षिणा स्वरूप १००० गाय तथा स्वर्णाभूषण इत्यादि प्रति पुरोहित दिये जाते थे। इसके बाद राजा अपनी प्रमुख रानी* के साथ यज्ञ मण्डप में बैठकर यज्ञ आरम्भ करते थे।

* श्री राम ने सीता के स्थान पर उसकी स्वर्णिम् प्रतिमा बनवाकर साथ रखी थी।

यज्ञ के समय घोड़ा लाया जाता था। उसे सजाकर छोड़ दिया जाता था और वह पूरे एक वर्ष तक घूमता रहता था, उसकी रक्षा के लिए चार सौ वीर सैनिक उसके साथ रहते थे।

घोड़े को छोड़ते ही राजा यज्ञ आरम्भ कर देते थे और पूरे एक वर्ष तक यह यज्ञ चलता रहता था। घोड़े के वापिस आने पर उसे यज्ञ मण्डप में लाया जाता था। उसके साथ बकरे भी होते थे। यज्ञ मण्डप में उसको अग्नि की तीन परिक्रमाएँ करवायी जाती फिर बकरों के साथ अश्व का बलिदान कर दिया जाता था।

अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा चक्रवर्ती सम्राट कहलाता था। अतएव इसी दिग्विजय के लिए राम ने भी अश्वमेध का आयोजन किया। अश्व की विदाई के बाद यज्ञ आरम्भ कर दिया।

अश्व बन्धनः—

हरा भरा वन था! प्रातः-कालीन सुहावनी

छटा छाई थी। कुटिया के समीपवर्ती अरण्य में कुछ लड़के खेल रहे थे। अचानक ही सामने से धूल के बादल उड़ते हुए दिखाई दिए। बालकों का खेल रुक गया। वे दूर से आ रहे धूल के बादलों को देखने लगे। एक लड़के ने डरते हुए कहा—'भागो! भागो!! कोई सेना आ रही है। कुछ लड़के लौटने को हुए। तभी श्याम वर्ण का सुन्दर सजा अश्व उनके पास आ पहुंचा। घोड़े के मस्तक पर एक कागज बंधा था। उस पर लिखा था—यह अयोध्या के सम्राट चक्रवर्ती श्रीराम का अश्व है। महापराक्रमी शत्रुघ्न इसकी रक्षा कर रहे हैं। जिस देश से यह अश्व निकल जायेगा। वह देश जीता समझा जायेगा। जो इस पृथ्वी पर अयोध्या के महाराज को अपना सम्राट न मानना चाहे, वह घोड़े को पकड़े और युद्ध करे!

यह पढ़ते ही लव खुशी से उछल पड़ा। उसने घोड़े की लगाम थाम ली और ले चला अपने कुटीर की ओर—'मैं युद्ध करूंगा! ये कौन राम है? मैं भी इन्हें देखूंगा।'

तब तक घोड़े की रक्षा के लिए साथ चलने वाले सैनिक आ पहुंचे। सेनापतियों के बहुत कहने पर भी लव ने अश्व को नहीं छोड़ा। उस समय वह दोनों तरुण हो चुके थे और वाल्मीकि ने धनुर्विद्या का अभ्यास भी उन्हें करा दिया था। उधर राम की चतुरंगिणी सेना में भरत और शत्रुघ्न अतिरिक्त हनुमान, अंगद, जाम्बवंत जैसे पराक्रमी योद्धा भी थे, लेकिन तेजस्वी कुमारों ने किसी की परवाह नहीं की।

पहले तो सैनिक इसे बाल सुलभ कौतुक ही समझते रहे लेकिन जब लव ने यह ललकार कर कहा—'मैं इस घोड़े को बिना युद्ध किये वापिस नहीं दूँगा।' तो उन्होंने शत्रुघ्न को लव के इस दुस्साहस की सूचना दी। शत्रुघ्न की चेतावनी के बाद भी लव ने घोड़े को बंधन मुक्त नहीं किया तो कुछ सैनिक घोड़े को खोलने के लिए आगे बढ़े। लव के तीरों ने उनकी भुजायें काट दीं। फिर लव ने गम्भीर होकर कहा—'इस घोड़े को मैंने बांधा

है। जो इसे खोलेगा उसे हम नष्ट कर देंगे।'

लव का यह उग्र रुप देखकर सैनिक घबरा गये। अपने साथी सैनिकों की यह दशा देखते ही दंग रह गये। शत्रुघ्न ने उसी समय अपने मुख्य सेनापति कालाजित को बुलाया और व्यूह रचना का आदेश दे दिया।

उस समय अन्य मुनि कुमारों ने लव से कहा कि 'अयोध्या नृप श्रीराम महान् बल और पराक्रम वाले हैं। अतः श्रीराम के यज्ञीय-अश्व को तुम मत रोको।' इस प्रकार की बात सुनकर लव उन द्विज आत्माओं से बोला—'जाओ! तुम क्षत्रियों के बल और पराक्रम को नहीं जानते। जो क्षत्रिय होते हैं वे किसी से नहीं डरते और जो द्विज होते हैं वे तो केवल भोजन करने में ही शोभा देते हैं। इसलिए तुम सब अपने २ घरों में जाओ और जननी जो देवे उसे खा पीकर सो जाओ।'



कालजित से युद्धः—

उधर कालजित ने व्यूह की रचना की और चुने हुए योद्धाओं के साथ लव के पास जा पहुंचा। उसने प्यार से लव को समझाने का प्रयत्न किया। लव न माना। यह देखकर कालजित लव पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन वह एक पग भी न बढ़ने पाया था कि लव के बाणों ने उसे बेध दिया। कालजित बाणों की जरा भी चिंता किये बिना तलवार निकालकर आगे बढ़ा। इसी बीच उसकी सेना के और योद्धा भी लव की ओर बढ़े। परन्तु लव के बाणों के कारण कालजित के सैनिक आगे नहीं बढ़ सके। दूसरे ही क्षण कालजित की सेना में भगदड़ मच गई। लव के चलाये बाणों से आहत होकर हाथी चिंघाड़ने लगे, घोड़े हिनहिनाने लगे। यह देखकर घायल काल-जित क्रोध से लाल हो गया। वह लव की ओर दौडा. लेकिन एकाएक लड़खड़ाकर नीचे गिर पड़ा लव के बाणों ने उसे बीच ही में गिरा दिया था।

लव कुमार ने कालजित के लगभग सभी योद्धाओं को मार डाला। कुछ बचे हुए सैनिक भागकर शत्रुघ्न के पास गये और उस परम अद्-भुत बालक द्वारा कालजित के मारे जाने का हाल सुनाया। उस एक साधारण छोटे से बालक द्वारा कालजित के मारे जाने का हाल कह सुनाया। उस एक साधारण छोटे बालक से यमराज के समान कालजित के मारे जाने का समाचार सुन कर शत्रुघ्न को बहुत आश्चर्य हुआ। दूसरे ही क्षण उन्होने रोष से दांत पीसते हुए अपने एक दूसरे सेनापति पुष्कल को युद्ध के लिए भेजा।

पुष्कल की पराजयः—

लव ने फिर आकाश मे उड़ते हुए धूल के बादल और नगाड़ों की गड़गड़ाहट सुनी। उसने समझा कि मुख्य सेना मैदान में उतर पड़ी है। वह धनुष पर कई तीर चढ़ाकर तैयार हो गया। पुष्कल के निकट आते ही लव के बाणों ने उसे एक ही पल में मूर्छित कर दिया।

हनुमान की हारः—

यह देखकर भीषण हुंकार भरते हुए हनुमान जंगल के वृक्षों को उखाड़कर आगे बढ़े। पर लव जरा भी विचलित नहीं हुआ। वह शान्त खड़ा रहा। हनुमान कुछ निकट आये और उन्होंने वृक्ष लव की ओर फेंके। लव ने बड़ी फुर्ती से बाण चलाकर उन सब वृक्षों को बीच ही में काट दिया। हनुमान अपना वार खाली जाते देखकर झल्ला उठे। उन्होंने अपनी पूंछ का आकार बढ़ाया और लव को फौरन उसमें लपेट लिया। पर लव ने हनुमान की पूंछ पर ऐसा घूंसा मारा कि वे तिलमिला उठे। उनकी पूंछ की पकड़ ढीली पड़ गई। लव उनकी पकड़ से बाहर आ गया। अब लव ने बाणों से ऐसा प्रहार किया कि हनुमान का सारा शरीर बिंध गया। वे बेहोश हो गये।

शत्रुघ्न से युद्धः—

जिस समय शत्रुघ्न को यह पता लगा कि हनुमान भी मूर्छित हो गये हैं तो उन्हें बड़ा

शोक हुआ। शत्रुघ्न मन ही मन विचार करने लगे कि अब मुझे क्या करना चाहिए ? यह बालक तो महान् बलशाली है। अतः अब वह स्वयं शत्रुघ्न रथ पर आरूढ़ होकर अंगद और नील जैसे वीर श्रेष्ठों को साथ में लेकर युद्ध करने के लिए वहां पर पहुंचे, जहां रण-पण्डित लव कुमार स्थित थे।

शत्रुघ्न ने पहली बार लव को विस्मय से देखा। छोटे से बालक का पराक्रम देखकर उनका हृदय गद्गद् हो उठा, पर युद्ध-भूमि में भावनाओं का कोई स्थान नहीं होता। शत्रुघ्न ने लव से पूछा "बालक ! तुम कौन हो ? क्या तुम राजा राम के बल और पराक्रम को नहीं जानते ? तुम्हारे पिता का क्या नाम है ? तुम्हारी जननी कौन है ? तुम इस यज्ञ के अश्व को छोड़ दो ! तुमने इसे क्यों बांध लिया है ? क्योंकि तुम अभी बालक हो इसलिए अभी भी मैं तुम्हारा अपराध क्षमा कर दूंगा।"

लव यह बात सुनकर क्रोध से बोला-'आपको मेरे नाम या पिता के नाम से क्या प्रयोजन है ?

मेरी अवस्था और कुल के पूछने वाले तुम कौन होते हो ? यदि वास्तव में आप बलशाली वीर हैं तो मुझसे समर क्षेत्र में युद्ध कीजिए। यदि अश्व को छुड़ाना है तो अपने बल और विक्रम से उसका विमोचन करें। यदि आप में अभी शक्ति है तो अश्व नहीं छोड़ा जायेगा।'

इतना कहकर लव ने अपना धनुष सजा लिया और मेघ के समान गम्भीर गर्जना करता हुआ बाणों से सेनानियों को काटने लगा। शत्रुघ्न ने भी अपरिमित संख्या वाले बाणों को उस पर छोड़ा किन्तु लव ने उस सम्पूर्ण बाणों के समुदाय को काट डाला। लव द्वारा छोड़े गये बाणों से वीर कट-२ कर महीतल पर व्याप्त हो गये। जहां तक भी दृष्टि जाती वहीं तक बाणों का पंजर दिखाई देने लगा। युद्ध कला में प्रवीण लव ने शत्रुघ्न के धनुष को भी काट डाला। जब शत्रुघ्न ने दूसरा धनुष उठाकर बाणों को छोड़ने का प्रयत्न किया तो लव कुमार ने उस दूसरे धनुष का भी भञ्जन कर दिया। शत्रुघ्न के रथ का अश्व भी

मर गया और सारथी भी नष्ट हो गया तो लव ने हँसकर इतने बाण छोड़े कि शत्रुघ्न को कुछ सूझ ही नहीं पड़ा। लव ने शत्रुघ्न के कवच को भी विदीर्ण कर दिया। उसके मस्तक का मुकुट काट कर तोड़ डाला और शत्रुघ्न के शरीर को बाणों से ऐसा छिन्न-भिन्न कर डाला कि वे बेहोश हो गये।

अब शत्रुघ्न की सेना के रोष का ठिकाना ही नहीं रहा। सबके सब योद्धा एक साथ टूट पड़े। लव फुर्ती के साथ इतनी बड़ी सेना से अकेले युद्ध करता रहा। इसी बीच शत्रुघ्न की मूर्छा दूर हो गई। अपनी सेना का नाश होते देखकर उन्होंने राम का दिया हुआ बाण धनुष पर चढ़ाया और निशाना साधकर लव की ओर छोड़ दिया। बाण लव की छाती पर लगा। उसके लगते ही लव मूर्छित हो गये। लव को धरती पर गिरते देखकर शत्रुघ्न ने तुरन्त उसे गोद में उठा लिया और रथ पर लिटा दिया।

लव कुश संग्रामः—

लव के साथ खेलने वाले बालक समीप के वृक्षों पर चढ़े उसका पराक्रम देख रहे थे। उन्होंने उसे मूर्छित देखा तो तुरन्त पेड़ों से उतरे और महर्षि बालमीकि के आश्रम में जा पहुंचे। लव-कुश यहीं पर अपनी माता सीता के साथ रहते थे। बच्चों ने सीता को और कुश को सारा समाचार सुनाया। लव के बेहोश होने की खबर सुनते ही सीता की आंखों में आंसू आ गये। यह देखकर कुश ने कहा—"मां तुम चिन्ता मत करो। मैं अभी जाकर लव को लाता हूं।" और मां के चरण छूकर कुश युद्ध भूमि की ओर दौड़ पड़ा।

अब तक लव को होश आ गया था। उसने कुश को आते देखा तो फौरन रथ से कूद पड़ा। कुश ने लव को गले से लगाया और फिर दोनों भाई अपने-२ धनुषों पर तीर चढ़ा-२ कर लड़ने के लिए तैयार हो गये। शत्रुघ्न ने भी सेना को युद्ध का संकेत कर दिया। अब क्या था! सारी

ना दोनों बालकों पर टूट पड़ी। हनुमान को भी ोश आ गया था। वह भी एक विशाल चट्टान नेकर दोनों भाइयों की ओर बढ़े। उसके साथ २ अंगद भी बढ़ा। लव-कुश ने घुटने के बल बैठकर कुछ इस तरीके से बाण चलाये कि बाण हनुमान और अंगद को बेधते हुए उन्हें आकाश की ओर ले चले। जब मार के कारण वे दोनों नीचे गिरने लगे तो लव-कुश ने फिर बाण चला दिए। वे कभी आकाश में और कभी धरती पर गिरते। अन्त में हनुमान और अंगद बेहोश हो गये। कुछ ही देर में लव-कुश ने शत्रुघ्न की सेना के सभी वीर योद्धाओं को मार गिराया। हनुमान और अंगद को अर्धचेतना अवस्था में देखकर सुग्रीव आक्रामक हुए और उन्होंने अनेक वृक्षों को उखाड़कर कुश पर प्रहार किया। किन्तु कुश ने सबको काट डाला। अनेक बाणों से व्यथित होकर सुग्रीव ने उस समर क्षेत्र में एक घोर पर्वत को उठाया और कुश के मस्तक के ठीक बीच में गिरा दिया किन्तु कुश ने उसे आता हुआ देखकर उसे अनेक बाणों

से ऐसा पीस दिया जैसे महारूद्र के अंग में लगाई जाने वाली भस्म हो गया हो। सुग्रीव ने जब बालक द्वारा ऐसा कार्य देखा तो वह भी युद्ध से हतोत्साहित हो गये। सुग्रीव को भी जब रणक्षेत्र में पतित देखा तो सभी और वीरों ने भागना आरम्भ कर दिया। कुश के बाण से शत्रुघ्न भी घायल होकर मूर्छित हो गये।

हनुमान और सुग्रीव को सीता के पास ले जाना:—

अब लव और कुश अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने एक बार वृक्ष से बंधे घोड़े की ओर देखा और फिर घर की ओर लौट पड़े। तभी उन्हें ध्यान आया कि इस विजय की स्मृति चिन्ह के रूप में कुछ लेकर चलना चाहिए। यह सोचकर कुश ने शत्रुघ्न के मुकुट में लगा बहुमूल्य मणि निकाल लिया और लव हनुमान और सुग्रीव की पूंछ पकड़ कर आश्रम की ओर ले चला।

वे जब आश्रम में पहुंचे तो सीता ने देखा कि

दोनों बानरों में एक तो महाबली हनुमान थे और और दूसरे सर्ववीर कपीश्वर सुग्रीव थे। उन दोनों को बंधे हुए देखकर वीरांगना देवी जानकी खूब हंसी और फिर बोली- "तुम्हें इन दोनों को छोड़ देना चाहिए ये दोनों महान बलशाली वीर हैं। यह तो वीर हनुमान हैं जिन्होंने लंकादाह किया था और यह ऋषिराज समस्त बानरों के राजा हैं। तुमने दोनों को क्यों पकड़ लिया है? छोड़ दो इनकी पूंछ को! मुझको बहुत आश्चर्य हो रहा है।"

माता के यह विलक्षण वचन सुनकर लव-कुश ने कहा—"ये दोनों ही उस युद्ध में महान बल वाले थे। कोई दशरथ का पुत्र राम नाम का राजा है। उसी ने अश्व छोड़ा है। उसके मस्तक पर लिखा था कि यह भूमि एक ही वीर वाली मेरी हैं। जो भी कोई क्षत्रिय हो घोड़े को ग्रहण करें और युद्ध करें अन्यथा मेरी आधीनता स्वीकार कर लें। मैंने भी सोचा मेरी माता क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुई हैं तो क्या वीरों को प्रसव दान देने

वाली नहीं ? ऐसी धृष्टता देखकर अश्व को मैंने बल पूर्वक रोक लिया। फिर युद्ध हुआ तो हमने समस्त सेना को जीत लिया और सेनापति मार डाले। अब यह अश्व हमारे आरोहण के काम में आया करेगा।"

सीता ने यह सुनकर कहा—बेटा ! तुमने बड़ा भारी अन्याय कर दिया और महत्वशाली श्री राम का अश्व हर लिया। बहुत से वीरों को तुमने मार दिया और इन दोनों कपीश्वरों को बांध लिया। ये, तुम और मैं सब श्री राम के हैं। यह घोड़ा अश्वमेध यज्ञ के लिए तुम्हारे पिता ने ही छोड़ा है।"

अपने पिता का नाम सुनकर लव-कुश खुशी से भर उठे। पर उन्होंने कहा—"हमने क्षत्रिय धर्म का पालन तो किया है न ?"

सीता को कुछ उत्तर न सूझ पड़ा। उन्होंने मन ही मन श्री राम का ध्यान किया और सूर्य को साक्षी करके प्रार्थना की कि यदि मैं मन-कर्म

और वाणी से श्री रघुनाथ को ही भजती हूँ तो उस पुण्य के प्रताप से सारी सेना और नृप जीवित हो उठें, जिनका विनाश श्री राम को न जानने वाले मेरे पुत्रों ने कर दिया है।

उसी क्षण सम्पूर्ण रणक्षेत्र की सेना जीवित हो गई। शत्रुघ्न को भी होश आ गया। वे चुप-चाप अश्व को लेकर सेना सहित अयोध्या लौट गये। घोड़ा आ ही पहुंचा था। यज्ञ का कार्य आरम्भ हुआ। यज्ञ में भाग लेने के लिए महर्षि बाल्मीकि के साथ लव-कुश भी आये थे। वे यज्ञ स्थान और अयोध्या की गलियों में रामायण सुनाने लगे। जहां भी लव-कुश गाने लगते लोगों की भारी भीड़ लग जाती।

राम मिलनः—

लव-कुश के रामायण गायन की कीर्ति राज भवन में श्री राम तक पहुंची। उनका गायन सुनते ही राम मुग्ध हो गये। उन्होंने दोनों भाइयों को पुरस्कार देना चाहा। पर दोनों ने एक भी मुद्रा

लेनें से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि आप प्रजा के साथ बैठकर बाल्मीकि रचित यह रामायण हमसे सुनें। श्री राम नें उनकी बात मान ली यज्ञ के बचे समय में लव-कुश ने रामायण गाकर सुनाई तो लोगों की आखों में आंसू आ गये। सब लव-कुश की ओर अपलक देखने लगे। उन्होंने राम-समाज में रामायण का ऐसा सुन्दर पाठ किया कि श्रोता आनन्द से विह्वल हो गये। राम ने रामायण के प्रणेता का नाम पूछा तो उन्होंनें बताया कि हम बाल्मीकि के शिष्य हैं उन्होंने ही रामायण की रचना की है। राम ने रामायण का सम्पूर्ण पाठ ध्यान पूर्वक सुना। उनके जीवन की अनेक सुखद स्मृतियां सजीव हो गईं। अन्त में जब सबको यह पता चला कि यह वीर बालक राम के ही पुत्र हैं तो लोग खुशी से उछल पड़े। राम गद्गद् हो उठे। उन्होंने महर्षि बाल्मीकि के आश्रम से सीता को बुलवाया।

सीता का धरती प्रवेश:—

बालमीकि ने राम से भेंट की और सीता को पुनः अपनाने का अनुरोध किया। महर्षि के मुख से सीता के चरित्र की प्रशंसा सुनकर राम बोले-'मुनिवर ! मेरी भी व्यक्तिगत धारणा सही है कि सीता परम सती-साध्वी है। मैंने उसे स्वेच्छा से नहीं सामाजिक भय से त्याग दिया है। अतः अब उचित यह होगा कि वह समाज के समक्ष अपनी निर्दोषता सिद्ध करे। तब मैं उसे सहर्ष अपना लूंगा।'

बालमीकि ने कहा–'ऐसा ही होगा। आप एक सभा बुलाइये। सीता सबके आगे शपथ लेकर अपने को निर्दोष सिद्ध करेगी।'

दूसरे दिन यज्ञशाला में सभा का आयोजन किया गया। बालमीकि सीता को साथ लेकर सभा में उपस्थित हुए। महर्षि ने विराट सभा में कहा–'मैं यह घोषणा करता हूँ कि सीता पतिव्रता और सदाचारिणी है। यदि इसमें कुछ असत्य हो

तो मुझे मेरी तपस्या का फल न मिले। हे राम! आप इसे पत्नि के रूप में पुनः ग्रहण कर लीजिए इसके गर्भ से उत्पन्न लव और कुश आप ही के पुत्र हैं........। सीता को जो कुछ कहना है सबके सामने कहे और जनता का विश्वास प्राप्त करे।'

सीता उस समय लज्जा-संकोच से भूमि में गड़ी जा रही थीं। वे आगे बढ़ीं और सबके आगे शपथ लेकर बोलीं—मैंने स्वप्न में भी अपने पति राम के अतिरिक्त अन्य किसी पुरुष का स्मरण नहीं किया। यदि यह सत्य हो तो धरती माता मुझे अपनी गोद में स्थान दे......।'

उसी क्षण वहां की धरती फट गई। दुःखिनी सीता सबके देखते ही देखते रसातल में चली गई। दर्शक गण सिहर उठे। राम सीता को बचाने के लिए दौड़े पर वे सदा-सर्वदा के लिए जा चुकी थी। उनकी उज्जवल कीर्ति ही शेष रह गई। इस घटना से जो जनता के हृदय में चोट पहुंची उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। राम जीवन भर सीता के लिए रोते ही रहे।

लव और कुश भी अपनी मां को धरती के भीतर समाते हुए देखते रहे। फिर मां को सदा के लिए बिछुड़ा देखकर फूट-फूट कर रो पड़े। राम भी कुछ न कर सके।

राम के बाद अयोध्या का राज्य लव ने संभाला। दोनों भाईयों ने अपने को प्रजा के कल्याण में लगा दिया। उन्हें जन्म से पिता नहीं मिले थे और जब पिता मिले तो मां सदा के लिए बिछुड़ गईं।

लक्ष्मण का त्यागः—

जीवन के अन्तिम दिनों में राम को एक और दुःख सहना पड़ा। उसकी कथा इस प्रकार है–

एक दिन एक तपस्वी श्री राम से भेंट के लिए आया। यह भी कहा जाता है कि वह स्वयं कालदूत ही था और राम को मृत्यु संदेश सुनाने आया था। उसने राम से एकान्त में गुप्त वार्ता करने की इच्छा प्रकट की। राम ने उसे अपने

पास बुला लिया और लक्ष्मण को यह आदेश देकर द्वार पर खड़ा कर दिया कि यदि कोई अन्दर आयेगा तो उसे मृत्यु दण्ड दिया जायेगा।

राम और उस अज्ञात तपस्वी की बातचीत चल रही थी कि द्वार पर मुनि दुर्वासा आ पहुंचे। ये राम से तुरन्त मिलने के लिए व्यग्र थे। लक्ष्मण ने उन्हें राम का आदेश बताया और तनिक देर और ठहरने के लिए प्रार्थना की। पर दुर्वासा ऋषि नहीं माने और शाप देने को तैयार हो गये। अब लक्ष्मण को विवश होकर अन्दर जाना ही पड़ा। उस समय तक राम और तपस्वी की वार्ता समाप्त हो चुकी थी। राम मुनि दुर्वासा की सूचना पाकर बाहर आये और उनका स्वागत करके आने का कारण पूछा। दुर्वासा ने कहा—राजन्! मैं अभी अपना उपवास समाप्त करके उठा हूं आपके यहां जो भी भोजन हो अभी मंगवा दीजिए।

राम ने तत्काल उनके भोजन की व्यवस्था कर दी। दुर्वासा तो खा-पीकर डकारें लेते हुए लौट गये

लेकिन उधर राम की दृष्टि लक्ष्मण पर पड़ी। लक्ष्मण उनके मनोभाव को ताड़ गये और अपराधी की भांति बोले-मैंने सत्य ही आपकी आज्ञा का उल्लघंन किया है अतः मुझे मृत्युदंड दीजिए। मेरे कारण आप अपना राजधर्म न त्यागिये।

राम ने कुछ सोचकर कहा—लक्ष्मण ! स्वजनों के लिए त्याग और वध दोनों समान हैं। इसलिए तुम अभी यहां से चले जाओ। जिससे धर्म की हानि न हो।

यह कहकर राम के सजल नेत्रों ने परम स्नेही लक्ष्मण को अन्तिम बार देखा। लक्ष्मण पूज्य भाई के चरण छू कर भवन से बाहर निकले और चुपचाप सरयू नदी के किनारे जाकर उसी दिन प्राण त्याग दिए।

महाप्रयाण:—

लक्ष्मण का मृत्यु संवाद राम के लिए असह्य हो गया। वे जीवन से विरक्त होकर बोले—लक्ष्मण

जिस मार्ग से गया है मैं भी उसी मार्ग से उसके पीछे जाऊँगा। जीवन भर वह मेरा अनुगामी था अब मैं उसका अनुगामी बनूँगा।

राम ने समस्त धार्मिक कृत्य किये। फिर वह सरयू तट की ओर चले। विशाल जन समुदाय चुपचाप उनके पीछे-२ चला। नदी के किनारे पहुंच कर उन्होंनें सबसे विदाई ली। फिर सबके सामने सरयू में जल समाधि ले ली। भरत, शत्रुघ्न और सुग्रीव ने भी राम का अनुगमन किया। जनता निष्प्राण सी हो गई।

नौ देवियों की अमर कहानी

इस पुस्तक में भगवती सती श्री दुर्गा जी, वैष्णो देवी, श्री ज्वाला जी, नैनादेवी, चिंतपुरनी देवी, मनसा देवी, बाला सुन्दरी देवी, कोट कांगड़े वाली देवी इन नौ देवियों के मंदिरों का इतिहास चित्रों सहित दिया गया है।

देवी की कथाएँ (लेखक एस. पी. डाकौर)

इस पुस्तक में वैष्णों देवी की कथा, दुर्गा जन्म कथा और ताराराानी की कथा सरल कविता में दी गई हैं।

माँ की महिमा (लेखक एस. पी. डाकौर)

इस पुस्तक में ध्यानू भक्त की कथा, ज्वाला जी की कथा, सोमागोमा का इतिहास दुखिया की कहानी आदि कथाएँ लेखक ने कविता में लिखी हैं।

माता की भेंट

नई-नई फिल्मी तर्जों पर माता की अनेको भेटों का सकलन, जग राते करने वालों के लिए विशेष उपयोगी पुस्तक

श्री वैष्णो देवी दर्शन

देवी की उत्पत्ति, राक्षसी का वध, वैष्णोदेवी यात्रा, वैष्णोदेवी का इतिहास, देवी के नौ रूप, ताराराानी की कथा, ध्यानू भक्त की कथा, दुर्गाजी की कथा, नैना देवी की कथा और देवी के सभी मुख्य मंदिरों के इतिहास भेटों सहित दिए गये हैं

सचित्र आरती संग्रह

सभी प्रमुख देवी—देवताओं की ५० से भी अधिक आरतियां इस पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

आर. बी. एस. प्रकाशन, हरिद्वार (उ०प्र०)

गायत्री अर्थ संग्रह : गायत्री चंद्रिका सहित

स्वामी सुरेश्वरानंद जी द्वारा संग्रहीत

प्रस्तुत ग्रन्थ मे गायत्री वेदसार निरूपण, गायत्री शब्द निरूक्ति, प्रणव विचार, याज्ञवल्क मुनि कृति गायत्री मंत्र का अर्थ, भारद्वाज मुनि कृत व्याख्या, माधवाचार्यकृत व्याख्या, विद्यारण्य मुनि कृत व्याख्या, गायत्री जप साधनं, गायत्री जप प्रकार निरूपण, आसन, जपमाला, पाणिमाला, कूर्मचक्र, होम विधि, मुद्रा विधि, मुद्रा लक्षण, कवच, ध्यान, पंचमुद्रा लक्षण, विसर्जन मुद्रा लक्षण, शाप विमोचन, गायत्री तर्पण विधि, सन्ध्या विधियाँ, गायत्री मंत्र, विनियोग मंत्र, गायत्री पूजन और पुरश्चरण आदि का अपूर्व संग्रह है।

पांतजलि योग सूत्र : योगदर्शन

मूल, अनुवाद एवं व्याख्या : श्री नंदलाल दशोरा

पुस्तक की विषय सूची को चार भागों मे विभाजित किया गया है १ समाधिपाद २ साधनपाद ३. विभूतिपाद ४. कैवल्यपाद। प्रथम भाग मे — योगशास्त्र का आरम्भ और योग लक्षण, चित्त की वृत्तियों के भेद और उनके लक्षण, चित्त वृत्तियों का निरोध, समाधि वर्णन, मन को स्थिर करने के उपाय, समाधि के भेद व उनका फल। द्वितीय भाग मे — क्रियायोग का स्वरूप और फल, अविद्या आदि पांच कलेश, कलेशों के नाश का उपाय, दृष्य और दृष्टा का स्वरूप, प्रकृति और पुरुष का सयोग तथा योग के पांच अंगों का वर्णन है। तृतीय भाग मे — धारणा ध्यान व समाधि का वर्णन, संयम का निरूपण, प्रकृति जनित पदार्थों का परिणाम, विवेक ज्ञान और कैवल्य। चतुर्थ भाग मे — सिद्धि प्राप्ति के हेतु, संस्कार शून्यता, वासनाये प्रकट होना व उनका स्वरूप, गुणों का वर्णन, चित्त का वर्णन, धर्ममेघ समाधि और कैवल्यावस्था।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार